Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 6
ISSN: 2581-6306 **doi :** https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

पुराणों में पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा तथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उसकी प्रासंगिकता

डॉ0 सिद्धार्थ सिंह
असि0 प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0), सम्बद्धः वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0)

संतोष कुमार पाण्डेय
शोध छात्र, प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0), सम्बद्धः वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0)

Article Info

Publication Issue :
November-December-2023
Volume 6, Issue 6
Page Number :28-31
Article History
Received :01Dec2023
Published :11Dec2023

शोध सारांश–
प्राचीन काल से ही मनुष्य पर्यावरण के महत्व से परिचित रहा है। मानवीय सभ्यता तथा संस्कृति पर्यावरण के संरक्षण में रहकर ही विकसित हुई। प्रकृति ने मनुष्य का पालन–पोषण किया तथा बदले में मनुष्य ने प्रकृति का सर्वाधिक सम्मान किया। पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए प्राचीन धर्मग्रन्थों में कहा गया है कि मनुष्य को अपनी इच्छाओं को नियंत्रण में रखकर पर्यावरण से उतना ही ग्रहण करना चाहिए जिससे उसकी पूर्णतः को क्षति न पहुँचे। वर्तमान युग में बढ़ती जनसंख्या के कारण तीव्र औद्योगीकरण, वनों की अंधाधुंध कटाई, वन्य जीवों का विनाश, परमाणु परीक्षणों, कीटनाशकों के प्रयोग तथा अन्य कई मानवीय क्रियाकलापों से पर्यावरण का संतुलन बिगड़ रहा है। पर्यावरण की शुद्वि न केवल सभ्यता व संस्कृति की प्रतीक होती है बल्कि हमारे समुचित विकास के लिए आवश्यक भी होती है। प्राचीन काल में पर्यावरण प्रदूषण की समस्या वर्तमान युग की भांति इतनी गम्भीर, नहीं थी, फिर भी पर्यावरण के सन्दर्भ में पौराणिक मनीषियों का चिन्तन व्यवहारिक तथा वैज्ञानिक होने के साथ–साथ महत्वपूर्ण भी था। अतः आज के वैज्ञानिक युग में भी पर्यावरण संरक्षण की संकल्पना को पूर्ण रूप से साकार करने के लिए वैज्ञानिक प्रयासों के साथ–साथ पुराणों में दिए गए विचारों को अपना लेने की महती आवश्यकता है।

कूट शब्द– पुराण, पर्यावरण, जल, भूमि, वनस्पतियाँ, वृक्ष, जीव–जन्तु, प्रदूषण, संरक्षण।

प्रकृति तथा मानव समाज सभ्यता के आरम्भ से ही एक दूसरे से सम्बंधित रहे हैं। मानव सभ्यताएं तथा संस्कृतियां प्रकृति के संरक्षण में ही पुष्पित, पल्लवित तथा विकसित हुई हैं। प्रकृति ने मानव का पोषण व संवर्धन किया तथा इसके बदले में मनुष्य ने प्रकृति का संरक्षण व सम्मान किया।[1] प्राचीन ग्रन्थो में पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए प्रार्थना करते हुए कहा गया कि–

ऊँ पूर्णमदः पूर्णमिंद पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवाशिष्यतेः।।[2]

अर्थात् मानव को अपनी इच्छाओं को वश में रख कर प्रकृति से उतना ही ग्रहण करना चाहिए जिससे उसकी पूर्णता को क्षति न पहुँचे।

पर्यावण शब्द परि + आवरण से मिलकर निर्मित हुआ है। जिसका शाब्दिक अर्थ है 'चारो तरफ से घेरा' अर्थात् हमारे चारो ओर जो वातावरण है, जिसका हम अप्रत्यक्ष तथा प्रत्यक्ष रूप से उपभोग करते हैं, पर्यावरण कहलाता है।[3] इसके अन्तर्गत सभी प्राकृतिक तत्व आकाश, अग्नि, जल, ऋतुएँ, पर्वत, वनस्पतियाँ, वृक्ष, जीव जन्तु, ग्रह–नक्षत्र इत्यादि शामिल किए जाते हैं। वातावरण के ये समस्त तत्व मानवीय कार्यों से प्रभावित होते हैं तथा स्वयं भी प्रभावित करते हैं। प्रारम्भिक काल से ही प्रकृति तथा मानव दोनों एक दूसरे के पूरक रहे हैं। मनुष्य के जीवन का कोई भी पक्ष पर्यावरण से पृथक नहीं है। दैनिक

Copyright © 2023 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

क्रिया, व्रत, अनुष्ठान, संस्कार, त्योहार, पूजा–पाठ, नृत्य संगीत इत्यादि में पर्यावरण समाहित है। भारतीय जन–जीवन में न सिर्फ धरती बल्कि जल, अन्तरिक्ष, अग्नि, वायु, सूर्य, सोम इत्यादि पूज्यनीय हैं। प्राचीन धर्मग्रन्थों में नदी, जलाशय, पर्वत, जीव–जन्तु, पशु, पक्षी, वृक्ष– वनस्पति इत्यादि पूज्यनीय हैं। इन सभी की पूजा का वर्णन हमें प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से पुराणों में मिलता है। प्राचीन काल से ही भारतीय धर्मग्रन्थों में पर्यावरणीय चेतना पर ध्यान दिया गया। सैन्धव सभ्यता से ही वृक्षपूजा जल पूजा, मातृ देवी की पूजा तथा प्रकृति पूजा के प्रमाण प्राप्त होते हैं। भारतीय समाज में प्रकृति तथा मानव जीवन को परस्पर समन्वित करके एकीकृत अस्तित्व की परिकल्पना की गई। मानवीय सभ्यता के आरम्भ से ही मनुष्य तथा प्रकृति का अटूट सम्बन्ध रहा है। अपने जन्म के समय से ही मनुष्य प्राकृतिक तत्वों पर आश्रित रहा है। जिसके कारण वह प्राकृतिक तत्वों की सुरक्षा एवं संरक्षण का दायित्व बहुत पहले ही समझ लिया था। भारतीय भूमि की प्राकृतिक बनावट के कारण यहाँ पर वन, उपवन, वनस्पतियों के अपरिमित भण्डार हैं। ये सभी भारतीय प्राकृतिक समानता का सुन्दर चित्रण हमारे समक्ष प्रस्तुत करते हैं।

भारतीय संस्कृति में पुराणों के आर्विभाव ने अपना अस्तित्व खोती हुई आर्य जाति को बचाया है। इसी कारण यदि पौराणिक युग को भारतीय संस्कृति, सभ्यता तथा आचार–विचार का सुधारक युग कहा जाए तो गलत नहीं होगा।[4] हजारों वर्षों का हमारा इतिहास इस बात का प्रत्यक्षदर्शी है कि जहाँ वृक्षों को महत्व दिया गया वहाँ पर कल्याण हुआ है, इसके विपरीत जहाँ वृक्षों की अवहेलना हुई वहाँ पर विनाश हुआ है। अतः यदि कहा जाए कि समस्त सृष्टि वृक्षों पर ही आश्रित है तो अत्युक्ति न होगी। भारतीय संस्कृति में पुराणों का विशिष्ट स्थान है। इसकी संख्या 18 है। ये सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक ज्ञान के साथ–साथ पर्यावरण से सम्बंधित जानकारी भी अनेक मंत्रों के माध्यम से प्रदान करते हैं ये मानव को प्रकृति के समीप लाकर उसके साथ सम्यक कर्म करने के लिए प्रोत्साहित भी करते हैं। पुराणों में मनवांछित फल प्राप्त करने के लिए यज्ञ किए जाने का वर्णन है। इस यज्ञ के माध्यम से प्राकृतिक वातावरण/पर्यावरण भी शुद्व होता था। पद्म पुराण में बताया गया है कि यज्ञ से देवताओं को भोजन (पोषण) प्राप्त होता है, यज्ञ द्वारा वर्षा होती है, इससे मानव तथा वृक्षों का कल्याण होता है–

यज्ञेनप्यायिता देवा वृष्टयुत्सर्गेण मानवाः।
आप्यायन वै कुर्वतिं यज्ञाः कल्याणहेतवः ।।[5]

इस प्रकार स्पष्ट है कि देवी– देवताओं को उनका भाग देने के लिए ही नहीं बल्कि प्राकृतिक वातावरण को स्वच्छ, सुरक्षित तथा संरक्षित करने के लिए यज्ञ का विधान किया गया। सभी प्रकार के यज्ञों का प्रावधान न सिर्फ देवी–देवताओं को प्रसन्न करने के लिए बल्कि पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले तत्वों को नष्ट करनें के लिए भी होता था। वर्तमान समय में भी मनुष्य को पर्यावरण संरक्षण के लिए वैज्ञानिक प्रयासों के साथ–साथ पुराणों में निर्दिष्ट इन उपायों को ध्यान देने की आवश्यकता है। श्रीमद्भागवत पुराण में यज्ञ पर जोर देते हुए कहा गया है कि, अन्न से सब प्राणी उत्पन्न होते हैं, अन्न वर्षा से उत्पन्न होता है।[6] इसके अनुसार धर्म तथा कर्म एक दूसरे के पूरक हैं, ईश्वर की प्रकृति के विषय में बताया गया कि ईश्वर ही प्रकृति की उत्पत्ति, पालन एवं विनाश का मूल कारण है।[7] अर्थात् ईश्वर तथा प्रकृति अलग–अलग न होकर एक ही तत्व के दो प्रतिरूप हैं। पुराण पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरणा प्रदान करते हैं। ये पर्यावरण की रक्षा के लिए वृक्षों, तालाबों तथा नदियों को स्वच्छ रखने के लिए संदेश देते रहे हैं। जल पृथ्वी पर सभी प्राणियों को जीवन प्रदान करने वाली तथा शक्तिवर्धक है। इसी की सहायता से वृक्षों, लताओं तथा वनस्पतियों को भी पोषण प्राप्त होता है। जल का मुख्य स्रोत पृथ्वी पर प्रवाहित होने वाली नदियाँ हैं, इन्हें देवी का स्थान दिया गया, तथा इनकी पूजा की गई। एक स्थान पर गंगा नदी के गुण–धर्म की व्याख्या करते हुए कहा गया है कि, शुभ तथा कल्याणकारी जल से परिपूर्ण गंगा नदी हिमालय पर्वत एवं पृथ्वी को पवित्र करती हुई अन्ततः मिलन के समय सागर को भी पवित्र कर देती है (आदि पुराण, 18–4)। आज समस्त विश्व जल प्रदूषण तथा जल संकट से जूझ रहा है। पौराणिक साहित्य में इसे रोकने का प्रयास किया गया। वामन पुराण में कहा गया कि जो मनुष्य जल को प्रदूषित करे उसे दण्डस्वरूप दुर्गन्धयुक्त तालाब में फेक दिया जाए।[8] ब्रहम पुराण में भी जल में मलमूत्र एवं सम्भोग करने का निषेध किया गया।[9] पौराणिक साहित्य में सरोवरों के निर्माण को प्रोत्साहित करने का वर्णन भी मिलता है। गरूण पुराण के अनुसार कूप, सरोवर तथा बावड़ी बनाने वाले मनुष्य को 21 कुलों की मुक्ति होती है तथा वह सीधे भगवान विष्णु के लोक को प्रस्थान कर जाता है।[10] जिस व्यक्ति द्वारा निर्मित तालाब में जल भरा रहता है वह व्यक्ति अग्निहोत्र यज्ञ सम्पन्न करने के समान पुण्य प्राप्त करता है। मत्स्य पुराण के अनुसार एक सरोवर के निर्माण में जो पुण्य मिलता है वह दस कुओं के बराबर है, दस सरोवरों के निर्माण में जो पुण्य मिलता है, वह एक विशाल सरोवर के बराबर है, दस विशाल सरोवर एक पुत्र के समान है तथा एक वृक्ष का रोपण दस पुत्रों के समान है–

दशकूप समोवापी दशवापीसमोह्रदः।
दशह्रदसमः पुत्रो दशपुत्रसमः द्रुमः।। [11]

पुराणों के अनुसार वृक्षारोपण से कई प्रकार के पुण्य प्राप्त होते हैं, ऐसा इसलिए कहा गया ताकि लोग अधिकाधिक पुण्य प्राप्ति की कामना से वृक्षारोपण कर सकें तथा इससे पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा मिल सके। शिव पुराण के अनुसार जो

व्यक्ति छायादार वृक्ष या बगीचा लगाते हैं वे सीधे यमलोक को जाते हैं तथा जो अत्यधिक मात्रा में वृक्षारोपण करते हैं वे पुष्पक विमान द्वारा यमलोक को प्रस्थान करते हैं। नारद पुराण में भी ईश्वर भक्तों को वृक्ष लगवाने, तालाब खुदवाने, बगीचे लगवाने का सुझाव दिया गया। अग्निपुराण के अनुसार वृक्ष, उद्यान तथा उपवन को लगाने वाला मनुष्य इस लोक में सुखपूर्वक निवास करता है।[12] भविष्य पुराण में वृक्षों की उपयोगिता का वर्णन करते हुए कहा गया है कि मूल वृक्ष से चारो ओर दस हाथ तक का क्षेत्र उत्तम है तथा जहाँ तक उसकी छाया व हवा पहुँचती है वह स्थान गंगा के समान पवित्र है।[13] पौराणिक काल में महिलाएँ पीपल, बेल, तुलसी, नीम, केला जैसे वृक्षों में पुण्य प्राप्ति के लिए जल देती थी, इससे इन वृक्षों को जीवित रहने के लिए जल भी सुलभ हो जाती थी, आज भी हिन्दू धार्मिक मान्यता में इन वृक्षों को जल देने का प्रचलन है। पीपल वृक्ष को बोधिवृक्ष भी कहा जाता है।[14] ऐतिहासिक तथा पौराणिक दृष्टि से इस वृक्ष का विशेष महत्व है। यह वृक्ष कीटाणुनाशक है। पर्यावरण सन्तुलन में इसका विशेष योगदान है। यह मात्र एक घण्टे में 1722 किलोग्राम आक्सीजन देता है तथा 2252 किलोग्राम अशुद्व कार्बन डाई आक्साइड पचाता है, इसलिए प्राचीन काल से इसकी पूजा की जाती है तथा इसे 100 पुत्रों के समकक्ष बताया गया।[15] श्रीमद्भागवत पुराण में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि, मैं समस्त वृक्षों में पीपल हूँ। अर्थात् पीपल के धार्मिक महत्व के साथ–साथ यहाँ पर पर्यावरण को सन्तुलित बनाये रखने पर जोर दिया गया। इसी प्रकार तुलसी का पौधा भी कीटाणुनाशक तथा आक्सीजन का उत्सर्जक होने के कारण हितकारी है, इसी कारण इसे देवी के रूप में मान्यता दी गई तथा इसकी पूजा की गई।[16] विष्णुत्तर पुराण के अनुसार किसी दूसरे के द्वारा लगाए गए वृक्ष की सिंचाई करने से भी महान फलों की प्राप्ति होती है–

सेचनादपि वृक्षस्य रोपितस्य परेण तु ।
महत्फलमवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा।।[17]

पौराणिक युग से भारतीय स्त्रियों के प्रकृति प्रेम का अनूठा इतिहास रहा है। प्रियंवदा, शकुन्तला, अनुसूइया जैसी स्त्रियाँ पुण्य प्राप्ति के उद्देश्य से छोटे–छोटे गगरियों से वृक्ष को सिंचित करती थी। पशुपतिनाथ की पत्नी पार्वती स्वयं प्रकृति की बेटी थी। पर्वत की बेटी होने के कारण पर्वत पर उगे वनों से उनका प्रेम स्वभाविक था। पुराणों के अनुसार वृक्षों की सेवा से समस्त सृष्टि की सेवा के बराबर पुण्य प्राप्त होता है। वृक्षों का दान पिण्डदान के समतुल्य है। कल्कि पुराण के अनुसार हवन करने वाले को स्वर्ग की प्राप्ति होती है परन्तु वन, उपवन तथा सरोवर के निर्माता को सर्वत्र मोक्ष की प्राप्ति होती है। वृक्षों की सेवा में सिंचाई का प्रमुख स्थान है। उचित मात्रा में जल मिलने से वृक्षों का जीवन सुरक्षित होता है, उनका विकासशीघ्र गति से होता है। इन पर आश्रित सभी प्राणियों को सुख प्राप्त होता है। इसके साथ–साथ पर्यावरण भी स्वच्छ होता है। वृक्षों के साथ–साथ समस्त मानवीय सभ्यता का आधार पर्यावरण ही है तथा पर्यावरण का आधार जल है जल के अभाव में मानव जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।[18] इसी कारण पुराणों में सरोवर (तालाब) के निर्माण को प्रोत्साहित किया गया। प्राचीन ऋषि–मुनियों का मानना था कि वृक्षों की सेवा में व्यक्ति जो श्रम तथा पुरूषार्थ का व्यय करता है, उससे उसका पाप नष्ट हो जाता है तथा पुण्य में वृद्वि होती जाती है वह सौभाग्य प्राप्त करता है। जल सिंचन के माध्यम से पवित्र वृक्षों का साथ हमें सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है तथा साथ ही साथ व्यक्तित्व का परिष्कार करता है।[19] पुराणों के अनुसार जब कुँए से पानी निकाला जाता है तो वह पापी पुरूष के पापकर्म के आधे भाग को नष्ट कर देता है तथा जिस व्यक्ति द्वारा निर्मित तालाब (जलाशय) का जल गाय, ब्राह्मण तथा साधु सन्त ग्रहण करते हैं, वह अपने साथ–साथ अपने पूर्वजों के पापकर्म को नष्ट कर सकने में समर्थ होता है प्राचीन ऋषि–मुनियों का कथन है कि जो व्यक्ति दुर्गम स्थानों पर वृक्षारोपण करता है वह अपने अतीत, वर्तमान तथा भविष्य के साथ–साथ अपने कई पीढ़ियों का उद्वार कर पाने में समर्थ होता है। अतः वृक्षारोपण आवश्यक है, इससे पर्यावरण संरक्षण भी हेाता रहेगा–

अतीतानागतान् सर्वान् पितृवंशास्तु तारयेत्।
कान्तारे वृक्षरोपी यस्तस्माद् वृक्षांस्तु रोपयेत्।।[20]

अर्थात् जो मनुष्य वृक्ष लगाता है उसे पुत्र रूपी रत्न की प्राप्ति होती है। वृक्ष लगाने वाला, तालाब निर्मित करने वाला, यज्ञ करने वाला पुरूष कभी स्वर्ग से नीचे का स्थान नहीं प्राप्त करता है। अग्नि पुराण के अनुसार गृह के पूर्व दिशा में बरगद, दक्षिण में आम तथा स्वस्थ पीपल का वृक्ष मंगलकारी है, घर के समीप दक्षिण दिशा में कटीला वृक्ष भी कल्याणकारी है, आवास के समीप उद्यान का निर्माण भी शुभ है।[21] ऐसी मान्यता के पीछे का यही उद्देश्य रहा होगा ताकि मनुष्य को उसके निवास स्थान के समीप स्वच्छ आक्सीजन प्राप्त हो सके। वर्तमान समय में मनुष्य द्वारा जनसंख्या वृद्वि होने के कारण अधिक अन्न का उत्पादन करने के लिए कीटनाशकों का प्रयोग किया जा रहा है, ये कीटनाशक भूमि को प्रदूषित करने के साथ–2 मनुष्य के स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाल रहें हैं। पुराणों में भूमि प्रदूषण को रोकने तथा प्रदूषित भूमि की शुद्वि के लिए कई प्रकार के उपाय बताए गए हैं जैसे भूमि की ऊपरी परत को खोदकर दबा देने, भूमि पर गोबर, लकड़ी, घास फूस डालकर भूमि के ऊपरी सतह में मिला देने, गोबर से लिपाई करने तथा वर्षा द्वारा अपवित्र भमि शुद्व हो जाती है।[22] ब्रहम पुराण के अनुसार भूमि की शुद्वि गायों के बैठने से तथा दाह मार्जन (बुहारी लगाने) से होती है।[23] अतः स्पष्ट है कि पुराणों में भूमि प्रदूषण को रोकने के लिए जैविक खाद का प्रयोग करने का उपाय बताया गया। वर्तमान समय में जब सम्पूर्ण

विश्व वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, भूमि प्रदूषण तथा अन्य समस्याओं का सामना कर रहा है। राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय स्तर पर इन समस्याओं से निपटने के लिए अनेक प्रयास किए जा रहे है, अधिक श्रम, धन का व्यय करने के बाद भी अपेक्षित परिणाम नहीं मिल रहें हैं। ऐसे में यदि हम पौराणिक साहित्य में मंत्रों के माध्यम से सांकेतिक रूप में बताए गए इन उपायों को अपना लें तो काफी हद तक पर्यावरण को सुरक्षित व संरक्षित कर सकते हैं तथा समस्त विश्व को आधुनिकता की बलि चढ़ने एवं प्रदूषित होने से भी बचा सकते हैं।

निष्कर्ष– मत्स्य पुराण, विष्णु पुराण, पद्म पुराण, गरूण पुराण, वराह पुराण, अग्नि पुराण, वामन पुराण, श्रीमद्भागवत पुराण तथा कुछ अन्य पुराणों में भी धर्म पर आधारित पर्यावरण संरक्षण से सम्बंधित विस्तृत निर्देष दिए गए हैं तथा प्राचीन काल से समाज उन निर्देशों को स्वीकार भी करता आ रहा है। पुराणों में पीपल, वट वृक्ष, आंवला, नीम, धतूरा, तुलसी, केला इत्यादि वृक्षों तथा पौधों को किसी न किसी रूप में पूज्यनीय माना गया है तथा आज भी इनकी पूजा होती है, वैज्ञानिक दृष्टि से ये पौधे कीटाणुनाशक तथा आक्सीजन के मुख्य उत्सर्जक माने गए हैं। पौराणिक समाज मे कर्मकाण्ड के अन्तर्गत पारलौकिक तथा भौतिक सुख प्राप्ति के लिए जो यज्ञिक अनुष्ठान करवाए जाते थे, वे केवल पारलौकिक सुख से ही सम्बंधित नहीं थे बल्कि वातावरण की शुद्वि का भी कार्य करते थे। पौराणिक ग्रन्थों में विविध मंत्रो के माध्यम से सांकेतिक रूप में मनुष्य को पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित किया गया। वर्तमान समय में अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के लिए कई प्रकार के प्रयास किए जा रहे हैं आज आवश्यकता है समाज में निवास करने वाले सभी लोगों को पर्यावरण की रक्षा करने के लिए दृढ़ संकल्प लेने की क्योंकि पुराणों में केवल उपाय बताए गए हैं परन्तु जब तक उन उपायों पर अमल नहीं होगा, पर्यावरण संरक्षण की कल्पना पूर्ण रूप से साकार नहीं होगा।अतः कहा जा सकता है कि पुराणों में संचित पर्यावरण सम्बंधी बहुउद्देशीय ज्ञान तथा पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा प्राचीन काल में उपयोगी तो था ही, साथ ही साथ आज के वैज्ञानिक युग में भी अति प्रासंगिक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. प्रज्ञा, पर्यावरण विशेषांक, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, अंक 55, भाग–2
2. त्रिवेदी, पी0सी0, गुप्ता गरिमाः 'पर्यावरण अध्ययन', पृष्ठ, 4–5
3. गुप्ता, डॉ0 दीपा, भारतीय अध्यात्म एवं नैतिक पर्यावरण, पृष्ठ 39
4. इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्।विभेत्यल्पश्रुताद्वेदो मामयं प्रहरिष्यति।।, त्रिपाठी, डॉ0 अनन्तमणि, पुराणों में पर्यावरण,Manavbharti live.com
5. पदम् पुराण, सृष्टि खण्ड 3/124
6. श्रीमद्भागवतगीता 3/14
7. श्रीमद्भागवतगीता 9/8
8. वामन पुराण, 1–23, नारद पुराण 1–322
9. ब्रहम पुराण, 2–24
10. गरूण पुराण 2–22ग
11. मत्स्य पुराण, विधान परिजात खण्ड 4, अ. 49
12. अग्नि पुराण 1, 16
13. भविष्य पुराण, 10–11
14. जैन, प्रेम सुमन, ''पर्यावरण सन्तुलन एवं शाकाहार,'' पृष्ठ, 51
15. पदम् पुराण, सृष्टि खण्ड, अध्याय 28
16. शर्मा, दामोदर, व्यास हरिश्चन्द्र ''हमारा पर्यावरण,'' पृष्ठ 121
17. विष्णुत्तर पुराण 3.297
18. पानीयदानं परमं दानामुत्तमं तदा।
19. सर्वेषां जीवपुंजानां तर्पणं जीवनं स्मश्तम्।।
20. शिव पुराण, स.स. 12/1
21. त्रिपाठी, डॉ0 अनन्तमणि, पुराणों में पर्यावरण, Manavbharti live.com
22. शिव पुराण, उ. संहिता 11/7
23. आग्नि पुराण 1–2/282
24. पद्म पुराण 1, 8
25. ब्रहम पुराण 11, 24